एक अंधी लड़की से बलात्कार: कुछ शर्मनाक मुद्दे

तारा आहलूवालिया

गांव बावलास, पंचायत समिति मांडल, जिला भीलवाड़ा (राजस्थान)।

घटना लगभग 10-11 महीने पहले घटी। अपराधी गांव का बहुत संपन्न और प्रभावशाली व्यक्ति भंवरलाल जाट है।

पीड़िता—श्रीमती नंदू देवी कुमावत, उम्र 25-27 साल। एक साल की उम्र में ही वह अंधी हो गई थी। 6 वर्ष पहले खान की बीमारी लग जाने से उसका पति मर गया था। वह अभ्रक की खान में काम करता था।

नंदू अंधी होने पर भी घर व खेती का हर काम कर लेती है। सिर्फ बीनना या चुगना नहीं कर पाती।

ससुराल की आर्थिक हालत काफी कमजोर है, इसलिए नंदू मज़दूरी करती थी।

कुछ महीने पहले नंदू घर में अकेली थी। रात को 8 बजे भंवरलाल जाट ने चाकू की नोक पर उसके साथ बलात्कार किया। इससे नंदू को गर्भ रह गया। ससुराल वालों ने उसे बदचलन कह कर घर से निकाल दिया। नंदू पूरे गांव में लावारिस बनी भटकती रही। कोई उसे रोटी दे देता तो वह अपना पेट भर लेती। ज्यों-ज्यों बच्चा होने का समय पास आ रहा था, नंदू और गांव के कुछ सज्जन लोग बहुत परेशान थे। इस काम की ज़िम्मेदारी कौन ले, यह सवाल उनके सामने था।

नंदू के पीहर वालों ने उसकी खबर लेने की भी जरूरत नहीं समझी। धीरे-धीरे यह खबर सरकारी अधिकारियों तक पहुंची। जिला महिला विकास निदेशक ने दो प्रचेताओं को जानकारी लेने भेजा। जब सरकारी कार्यकर्त्ताओं ने नंदू के बारे में जानकारी चाही तो गांववालों ने रातों-रात फैसला कर नंदू को गढीला फार्म गांव में 'नाते' रखा दिया, यानी दूसरी शादी कर दी।

हम लोग दो-तीन दिन पहले नंदू के इस 'नाते के गांव में' उससे मिलने गए।

कमज़ोर, बेबस औरत

नंदू और गांव के लोगों से बात करके ये तथ्य उभरे—घर की आर्थिक स्थिति कमज़ोर है। नंदू के पति का मानसिक विकास ठीक नहीं हुआ है। गांव की भाषा में वह भोला है। नंदू अपने पति की तीसरी पत्नी है। पहली दोनों पत्नियां उसे छोड़कर अन्य पुरुषों के साथ चली गईं क्योंकि वह मानसिक रूप से ठीक नहीं है। नंदू का झगड़ा अभी पहली ससुराल वालों से चल रहा है। इनकी जाति (कुमावतों) में झगड़ा निपटाने में 10-20 हजार रु. लग जाते हैं। नंदू चूंकि अंधी है, बलात्कार की शिकार है, उसकी इज्जत बिगड़ गई है, इसलिए उसका झगड़ा 300-350 रु० में निबट जाएगा।

नंदू अपने साथ हुई दुर्घटना के बारे में बताना नहीं चाहती थी, पर जब उसे पता चला कि हम इस बारे में जानते हैं तब उसने बात की। उसने बताया कि इस नये 'नाते' के घर में उसे कोई परेशानी नहीं है। उसे अपनी छः साल की बच्ची बहुत याद आती है। उसके देवरों ने उसे अपने पास रख लिया था और उससे बिना पूछे उसकी शादी भी कर दी थी। 6 साल की लड़की अब विधवा है। उसने यह भी बताया कि भंवरलाल जाट ने पहले भी गांव की एक लड़की से बलात्कार किया था जिसने आत्महत्या कर ली थी।

'नाते' आने से उसे अच्छा लगा है, क्योंकि उसका ठिकाना बन गया है और वह अपने को सुरक्षित मानने लगी है। वह कोशिश कर रही है कि उसकी बेटी उसके पास आ जाए। मौजूदा ससुराल वालों को इसमें कोई आपत्ति नहीं है। नाते आने के बाद नंदू के लड़का पैदा हुआ जो 5-7 दिन जिंदा रहकर टिटेनस से मर गया।

सब गांववालों के सामने नंदू ने भंवरलाल जाट का नाम लिया, पर गांव में उसके खिलाफ आवाज़ उठाने को कोई तैयार नहीं है।

कुछ सवाल

अंधी या पागल या कमज़ोर व लाचार औरत के साथ कोई भी बलात्कार कर सकता है। लोग उसी से सवाल करते हैं—तू तो अंधी है, तुझे क्या पता कौन था?

इसी जिले के कोटड़ी गांव में एक व्यक्ति रात को एक कुतिया को पेड़ से बांधकर उसके साथ संभोग कर रहा था। गांव के किसी व्यक्ति ने उसे देख लिया और दौड़कर पकड़ लिया। दूसरे दिन गांववालों के सामने मीटिंग में उससे सवाल किया गया—"तू कुतिया के साथ ऐसा कर सकता है तो बहू-बेटियों को क्या छोड़ेगा?" उसे दंडित किया गया।

शर्मनाक रुख

गांववाले कुतिया पर सवाल उठा सकते हैं तो एक औरत के साथ हुए बलात्कार पर क्यों नहीं? क्या प्रभावशाली व्यक्ति के सामने औरत की इज्जत कुतिया से भी बदतर है?

इस मुद्दे पर एक बैठक में हमने चर्चा की और तय किया कि बावलास जाकर मीटिंग करनी चाहिए, चाहे हम सीधे-सीधे सवाल न भी कर सकें। बलात्कार से संबंधित कोई फिल्म दिखाएं जिसमें गांववालों की ताकत दर्शाई गई हो।

हमें आशा है कि आप शीघ्र इस मुद्दे पर अपने विचार लिखकर हमें अपने विचारों से अवगत कराएंगे।

इस मुद्दे पर 'सबला' के पाठकों के विचारों का स्वागत है। □